अनन्तमूल

(*Hemidesmus indicus, R.Br. Syn. Periploca indica*)

कुल	:	Periplocaceae/Apocynaceae
आयुर्वेदिक नाम	:	अनन्तमूल
संस्कृत नाम	:	श्वेत सारिवा, अनन्तमूल, नाग जिह्वा
हिन्दी नाम	:	अनन्तमूल, अनन्तबेल, कपूरी
यूनानी नाम	:	Ushba, Zaiyana
व्यापारिक नाम	:	सारिवा, अनन्तमूल
अंग्रेजी नाम	:	Indian sarsaparilla
उपयोगी भाग	:	जड़

रासायनिक संरचना

अनन्तमूल की जड़ों में कोमेरिन (Coumarin), स्टेरॉल्स – हेमीडोस्टेरोल (Hemidosterol), तथा हेमीडेस्मोल (Hemidesmol), रेजिन्स, टैनिन्स, फैटी एसिड्स, सेपोनिन्स तथा ग्लायकोसाइड्स पाये जाते है। पौधे के तने में कैरोटेनॉयड (Carotenoid), विटामिन–'ए', विटामिन–'सी', टैनिन्स, फीनोलिक्स, एन्थ्रोसायनिन्स, अपचायक (reducing) तथा नॉनरिडयूसिंग शर्करा पाये जाते हैं। फूलों तथा पत्तियों में कूमारिन्स, रूटिन (rutin), हाइपेरोसाइड (Hyperoside), फ्लेवेनोइड्स पाये जाते है। इस पौधे में पाये जाने वाले रासायनिक अवयवों में हेक्साट्रायाकोन्टेन (hexatriacontane), ल्यूपेरोल (luperol), अल्फा एमायरिन (α-amyrin), बीटा एमायरिन (β-amyrin), 6 प्रकार के पेण्टीसायक्लिक ट्राईटर्पिन्स (pentycyclic triterpenes), ल्यूकोडर्मा लिग्नॉयड्स (leucoderma lignoids), हेमीडेस्मीनाइन (hemidesminine), हेमीडेस्मीन–I, तथा II (hemidesminine - I&II) प्रमुख है।

औषधीय गुण

अनन्तमूल की जडों में अनेक औषधीय गुण पाये जाते है। ये पीड़ा अनुभूति शामक (antinociceptive), रक्तशोधक, शांतिदायक (demulcent), स्तम्भक (astringent), स्वेदजनक (diaphoretic), मूत्रवर्धक (diurctic), ज्वरनाशक (antipyretic), कैंसररोधी, घावों को भरने वाली, अतिसाररोधी, एण्टीऑक्सीडेन्ट, सर्प विषरोधक (antivenom), कुष्ठनाशक, पथरीरोधक, रक्तचाप कम करने वाली (hypotensive), कैंसर निवारक (chemopreventive), मांसपेशियों में ऐंठन उत्पन्न करने वाली (spasmodic), जीवाणु प्रजनन नियंत्रक (bacteriostatic), कवकरोधी (antifungal), जीवाणुरोधी (antibacterial) तथा शक्तिवर्धक (tonic) होती है।

उपयोग

अनन्तमूल का आयुर्वेद एवं परम्परागत चिकित्सा पद्धतियों में प्राचीन काल से उपयोग हो रहा है। यह आयुर्वेद के रसायनों में से एक है। दशमूलारिष्ठ सहित लगभग 46 विभिन्न आयुर्वेदिक औषधियों का एक प्रमुख घटक है। इसे त्रिदोषशामक माना जाता है। अनेक रोगो जैसे – कुष्ठ, पुराने चर्म रोगो, जीर्णज्वर, दमा, ब्रोंकाइटिस, उपदंश (syphilis), खुजली (pruritus), जीर्ण गठिया (chronic rheumatism), प्रदर (leucorrhoea), दाद (herpes), पुरानी खांसी, भूख न लगना, अपच (dyspepsia), पेट की गैस, कृशता (debility), नपुसंकता (impotence), अग्निमांद्य, अतिसार, प्रवाहिका, गण्डमाला, आमवात, शुक्रदौर्बल्य, मूत्रकृच्छ, पीलिया (jaundice) श्वासरोगो, अरूचि, स्तन्यविकार, उदरविस्तार (abdominal distension), निरगी, जोड़ों के दर्द (gout), पागलपन, पुराने तन्त्रिका रोगों (chronic nervous diseases) तथा श्वास नली में जलन के उपचार में इसका प्रयोग किया जाता है। इसकी जड़ों के पेस्ट के लेप से सूजन तथा गठिया के दर्द में राहत मिलती है। इसके दूध (latex) का प्रयोग आँखों की सूजन के उपचार में किया जाता है। इसकी पत्तियाँ चबाने से ताजगी मिलती है। इसका उपयोग पेय पदार्थों, अचार तथा काढ़े के रूप में भी किया जाता है।

वितरण

यह प्रजाति भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश, श्रीलंका, ईरान तथा मौलुकस द्वीप समूह (इण्डोनेशिया) में पाई जाती है। भारतवर्ष में यह ऊपरी गांगेय मैदानों, पूर्व में असम तक तथा मध्य, पश्चिम एवं दक्षिण भारत में समुद्र तल से 600 मीटर ऊँचाई तक के कुछ स्थानों पर प्राकृतिक रूप से पाई जाती है। विगत वर्षों में बढती मांग की पूर्ति हेतु प्राकृतिक स्त्रोतों से किये गये अतिविदोहन के फलस्वरूप अब यह प्रजाति कई स्थानों पर दुर्लभ, लुप्तप्राय अथवा संकटापन्न प्रजाति की श्रेणी में आ गई है। अतएव इस मांग की पूर्ति हेतु अब कई स्थानों पर इसकी खेती भी की जा रही है।

आकारिकी

अनन्तमूल एक बहुवर्षीय सदाबहार लता है। इसका तना गहरे बैंगनी अथवा बैंगनी भूरे रंग का, पतला रस्सी जैसा, बेलनाकार, गाँठों पर मोटा, जमीन पर लेटा हुआ अथवा किसी वृक्ष के तने के सहारे तंतुओं (tendrils) की सहायता से आंशिक रूप से खडा हुआ होता है। इसका तना एवं शाखाएँ वामावर्त (anticloke wise) दिशा में मुड़ी हुई होती है। इसको खुरचने पर दूध (latex) निकलता है। इसकी जड़ें काष्ठीय तथा सगन्ध (aromatic) होती है। ये बहुत लम्बी (कभी–कभी तीन मीटर तक) होती है जिसके कारण इस पौधे का नाम अनन्तमूल पड़ा है। इसकी पत्तियाँ सदाबहार, छोटे डंठल (petiole) वाली, दीर्घवृतीय अण्डाकार से लेकर रेखीय–भालाकार (elliptic-oblong to linear-lanceolate) तक विभिन्न आकार वाली, एकान्तर (alternate) तथा विपरीत (opposite) क्रम में सनायोजित, ऊपर की सतह सफेद तथा निचली सतह रूपहली (silvery white) होती है। इसके फूल पंचदलीय, बाहर की तरफ हरे रंग एवं अन्दर की तरफ बैंगनी रंग के होते है। इन फूलों में डन्ठल बहुत ही छोटे होते है तथा ये छोटे–छोटे गुच्छे के रूप में लगे होते है। इस पौधे में फूल कम ही लगते है तथा ये सामान्यतः अक्टूबर से जनवरी तक आते है। फल बेलनाकार, पतले, युग्मीय, सफेद रंग के एक कोष्ठीय (unilocular) कूप (follicles) होते है। फल जनवरी माह में परिपक्व हो जाते है। फल बहुबीजीय होते है। बीज चपटे, लम्बाकार (oblong) होते है तथा इनकी सतह पर मुलायम बालों का गुच्छा होता है।

जलवायु एवं मृदा

अनन्तमूल की खेती के लिये सम–शीतोष्ण जलवायु उपयुक्त है। दोमट (loam), गाद (silt) तथा मटियार दोमट (clay loam) मृदाओं में इसे उगाया जा सकता है। थोड़ी क्षारीय मृदा जिसकी pH Value 7.8 - 8.5 हो, इसकी खेती के लिए अधिक उपयुक्त हैं। इसके अलावा धरण (Humus) युक्त मृदा में अनन्तमूल की वृद्धि दर अधिक होती है।

कृषि तकनीक

प्रवर्धन सामग्री

इसकी खेती के लिए एक वर्ष पुराने पौधों की जड़ों व तने की कटिंग्स का रोपण किया जा सकता है। तने से प्राप्त कटिंग की तुलना में जड़ों से प्राप्त कटिंग में बेहतर प्रस्फुरन (sprouting) तथा जीवितता (survival) पाये गये है। एक हेक्टेयर क्षेत्र में खेती के लिए लगभग 28,000 कटिंग्स की आवश्यकता होती हैं।

नर्सरी तकनीक

रोपणी में अनन्तमूल के बीज अथवा कटिंग्स से पौध सामग्री तैयार की जाती है। इसके बीजो में अंकुरण प्रतिशत अच्छा (95 प्रतिशत तक) प्राप्त होता है। टिशूकल्चर से भी इसकी पौध सामग्री तैयार की जा सकती हैं। नर्सरी में पौधे जुलाई से सितम्बर माह के बीच थैलियों अथवा स्टाइरोफोम ट्रेज (styrofoam trays) में उगाये जाते हैं। यदि शेड नेट हाउस (shade net house) की सुविधा उपलब्ध है, तो नर्सरी में पौधे ग्रीष्म काल में भी तैयार किये जा सकते है परन्तु शेड नेट हाउस में पर्याप्त आर्द्रता बनाई रखनी होगी। कटिंग्स से जड़ निकलने के लिए उपयुक्त जड़ प्रवर्धक होर्मोन्स से उपचारित करना चाहिए। लगभग 30 से 45 दिन में कटिंग्स में जड़ निकलने लगती है।

क्षेत्र तैयारी

खेत की ट्रेक्टर अथवा हल से जुताई कर पाटा चलाकर मिट्टी को समतल कर लेना चाहिए। तत्पश्चात् 60 x 60 से.मी. अन्तराल पर 30 x 30 x 30 से.मी. आकार के गड्ढे खोदे जाते है। गड्ढों में 1–2 कि.ग्रा. गोबर खाद/कम्पोस्ट/वर्मीकम्पोस्ट/फार्म यार्ड मेन्योर (FYM) तथा आवश्यकतानुसार रेत का मिश्रण भरा जाता है।

रोपण

नर्सरी में कटिंग से तैयार पौधों, जिनमें 3–5 पत्तियाँ आ गई हो को खेत में पहले से तैयार गड्ढो में वर्षा ऋतु में प्रत्यारोपित किया जाता है। प्रत्यारोपण के समय रोपित पौधों की सिंचाई करना आवश्यक है।

रखरखाव

प्रत्यारोपण के बाद लगभग 15 दिन के पश्चात् एक सिंचाई तथा पुनः एक माह पश्चात् एक बार और पौधों की सिंचाई की जानी चाहिए। चूंकि क्षेत्र तैयारी के समय गड्ढो में ऑर्गेनिक खाद दी जा चुकी है, अतः बाद में अलग से रासायनिक उर्वरक देने की आवश्यकता नहीं है। खरपतवार की रोकथाम के लिए 30 से 45 दिन के अंतराल पर 3 से 4 बार निदाई करना चाहिए। इसकी फसल में रोग अथवा कीट का प्रकोप नहीं पाया गया है।

विदोहन प्रबंधन

जड़ो को परिपक्व होने में दो से ढाई वर्ष का समय लगता है। विदोहन दिसम्बर–जनवरी में करना चाहिए। विदोहन के समय जड़ो को सावधानी से खोदना चाहिए। जड़ों का कुछ भाग जमीन के अन्दर आगामी फसल हेतु छोड़ देना चाहिए।

विदोहनोत्तर प्रबंधन

खुदाई से प्राप्त जड़ों को पानी से अच्छी तरह धोकर उन्हें किसी ठण्डे व सूखे स्थान पर छाया में सुखाना चाहिए। भलीभांति सूख जाने पर ही इनका भण्डारण करना चाहिए।

ई-चरक ऐप

- जड़ी बूटियों, सुगंधित औषधियों, कच्चे माल एवं इनसे संबंधित जानकारी के लिये ई-चरक (ई-मंच) का उपयोग करें।
- यह ऐप एंड्रॉइड मोबाइल, प्ले-स्टोर एवं गूगल पर भी उपलब्ध है।

औषधीय पौधों की कृषि तकनीक, प्राथमिक प्रसंस्करण एवं विपणन संबंधी अधिक जानकारी के लिये संपर्क करें।

क्षेत्रीय संचालक

क्षेत्रीय-सह-सुविधा केन्द्र (मध्यक्षेत्र)

राज्य वन अनुसंधान संस्थान, पोलीपाथर, जबलपुर-482008 (म.प्र.)

संपर्क : 0761-2665540, 9300481678, 9724658622, फैक्स : 0761-2661304

ई-मेल : rcfc_sfri817@rediffmail.com, sdfri@rediffmail.com

वेब : http://www.rcfccentral.org

Amrit # 8348634350

अनन्तमूल

(*Hemidesmus indicus, R.Br. Syn. Periploca indica*)

क्षेत्रीय-सह-सुविधा केन्द्र, मध्य क्षेत्र

राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड

आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्धा और होम्योपैथी (आयुष) मंत्रालय, भारत सरकार

2020